अमृतलाल नागर के उपन्यास साहित्य में सांस्कृतिक चेतना

डॉ. मुदस्सिर अहमद भट्ट
प्रो. ज़ाहिदा जबीन

"सांस्कृति शब्द 'कृ' धातु में 'सम' उपसर्ग तथा 'घ' प्रत्यय लगाने से बनता है, जिसका अर्थ है- सुधारना, या परिष्कार करना |"[1] अंग्रेजी में संस्कृति के लिए 'कल्चर' शब्द का प्रयोग किया जाता है, जो लैटिन भाषा के 'कुल्तुरा' (cultura) शब्द से लिया गया है, जिसका अर्थ है पैदा करना, जोतना, विकसित करना, संवर्द्धना या परिष्कृत करना | डॉ. श्याम सुन्दर दास ने "संस्कृति को रहन-सहन की रूढी माना है|"[2] आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार "संस्कृति व्यक्ति के अंतर के विकास का नाम है|"[3] लालचन्द्र प्रार्थी लिखते हैं- "देश और उसके लोगों की परम्पराओं और अनुश्रुतियों, उनके रीति-रिवाजों, उनकी कला, भाषा यहाँ तक कि समूचे रूप में उनकी संस्कृति से न केवल उनका अतीत प्रकाश में आता है, बल्कि लोगों की विचारधाराओं से उनके भविष्य के बारे में भी अंदाज़े लगाए जा सकते हैं और वास्तविकता यह है कि जनता की संस्कृति की कहानी किसी देश की असल कहानी होती है |"[4]ई. वी. टाइटलर के अनुसार "culture is that complex whole which includes knowledge, belief art, morals, law has customs any other capabilities and habits acquired by man as a member of society."[5]

अतः कहा जा सकता है कि मानवीय विचार, कर्म, परम्पराएँ, विधि-विधान व नियम, शिक्षा, नैतिकता आदि जो मानव के विभिन्न कारकों जैसे धार्मिक, लौकिक, अध्यात्मिक तथा राजनीतिक क्रियाकलापों के कारण परम्पराओं का रूप धारण करते हैं, संस्कृति के अंतर्गत आते हैं |

भारतीय संस्कृति विश्व विख्यात प्राचीनतम संस्कृतियों में से एक है, जो कई संस्कृतियों को आत्मसात करने में सफल रही है | अमृतलाल नागर के मतानुसार- "भारतीय संस्कृति का सब कुछ भारत देश में ही नहीं उपजा, बहुत कुछ का उदगम स्रोत भारत के बाहर से भी है | इसी तरह बाहर वालों ने भी अपनी संस्कृतियों में भारत के बहुत से संस्कार ग्रहण किए हैं |"[6] अपनी इसी आत्मसात तथा समन्वयकारी प्रवृति के कारण भारतीय संस्कृति व्यापक व श्रेष्ठ बनी रही | किन्तु परिवर्तित हो रहे समाज ने भारीतय सामाजिक व्यवस्था व संस्कृति को भी धीरे-धीरे बदल दिया |

नागरजी के उपन्यास साहित्य में भारतीय संस्कृति पर पाश्चात्य प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है | यद्यपि ग्रामीण जीवन की सांस्कृतिक मान्यताओं पर इसका अधिक प्रभाव नहीं पड़ा किन्तु नगरों में यह प्रभाव हावी रहा है | यही कारण है कि स्वतंत्रता- संग्राम के पश्चात् स्वदेशीकरण पर अधिक ध्यान दिया गया | बी. एल. ग्रोवर एवं यश्पाल ने अपनी पुस्तक में इसकी पुष्टि की है- "स्वतंत्रता के पश्चात् एक निश्चित प्रयत्न किया गया है कि पारम्परिक पद्धतियों को भी बढ़ावा मिले | ललित कलाओं, नृत्य, संगीत वादन इत्यादि को अंग्रेजी राज्य के काल में कोई प्रोत्साहन नहीं मिला और केवल स्वतंत्रता पश्चात् ही इन ललित कलाओं को प्रोत्साहन मिला है |"[7]

आधुनिकीकरण के कारण जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में नवीनता का आगमन हुआ | अतः संस्कृति के स्वरूप में भी बदलाव स्वाभाविक था | परिणामस्वरूप "आधुनिक युगीन नव आलोकित नवीन चिंतकों में चुनौती की भावना की प्रधानता है और पाश्चात्य संस्कृति के आक्रमण रूप से वह भारतीय संस्कृति की रक्षा करते हैं, दूसरी ओर जड़ता को प्राप्त परम्परागत रूढ़िवादिता से दबे समाज को मुक्त करते हैं |"[8]

भारतीय संस्कृति पर पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव अमृतलाल नागर के उपन्यासों में स्पष्ट लक्षित होता है, जिसके विभिन्न आयामों तथा स्वरूपों को सूक्ष्मता के साथ लेखक ने अभिव्यक्त किया है | वास्तव में नागर जी जिस युग में उपन्यास सृजन में प्रवृत्त थे वह युग धार्मिक तथा सांस्कृतिक दृष्टि से पुनर्जागरण का युग था क्योंकि एक ओर जहाँ भारतीय जनता स्व-अस्तित्व के लिए संघर्षशील थीं तथा दूसरी ओर धर्म तथा संस्कृति के क्षेत्र में भी नवीन चेतना का प्रादुर्भाव हो रहा था | उस स्थिति में नागर जी सांस्कृतिक धरोहर को संजोकर रखने के पक्षपाती हैं, जिसका चित्रण 'बूंद और समुद्र' उपन्यास में इस प्रकार हुआ है- "हिन्दुस्तान एक बंद हवेली की तरह है जिसमें बेशुमार अनुपम रत्न, मणियों और कंकड़-पत्थर, कूड़े-कचरे का ढेर एक साथ मिलकर चारों ओर बुरी तरह छितरा हुआ है | इस हवेली को नए सिरे से आबाद करने वाले समाज की, उन पर लाज़मी तौर पर यह जिम्मेदारी आ जाती है कि वह अपनी रत्नमणियों को कूड़े से निकाल कर संजोए | कहीं ऐसा न हो कि कूड़े-कचरे के साथ हमारे घर की बेशुमार दौलत भी घूरे पर चली जाए और ऐसा भी न हो कि मणियाँ बीनने के कठिन काम से आलस्य करते हुए हम अपने घर के इस कूड़े-कचरे की सडांध में ही घुटते बैठे रहें |"[9] वही नागरजी मानव हित तथा राष्ट्र हित के लिए संस्कृति को आवश्यक मानते है | लेखक का कथन है- "संस्कृति शब्द की जीवन शक्ति और राष्ट्र का वैभव केवल बढ़ना ही जानता है | यदि यह कालचक्रवश घटने की परिस्थिति में आ

भी जाता है तो भले ही वहाँ तक आ जाये कि सब कुछ खंडहरों में बोलता रहता है | विगत वैभव राष्ट्र को सदा आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है |"[10]

'बूंद और समुद्र' उपन्यास के माध्यम से ही लेखक ने यह स्पष्ट दर्शाया है कि वर्तमान समय की संस्कृति पतन की ओर जा रही है जिस पर वे चिंता व्यक्त करते हुए कहते है- "एक तरफ जहाँ हमारी संस्कृति ने ये अजंता-एलोरा वगैरा जड़ पहाड़ों में चेतना भरी, वहीं किसी सिस्टम की खराबी से चेतन आदमी को जड़ पत्थर बना दिया | हमारे इतने अच्छे-अच्छे आदर्श समाज में एक जगह अपना सच्चा असर रखते हुए भी सिमट कर नई शक्ति नहीं बना पाते | वजह क्या है ? व्यक्ति की इतनी सच्ची निष्ठा होने पर भी हमारा नेशनल कैरेक्टर कुछ भी नहीं |"[11]

आलोच्य उपन्यास में उपन्यासकार नागर जी विकासशील बौद्धिकता के कारण सांस्कृतिक मूल्यों के प्रति आशंका व्यक्त करते है- "हजारों साल में मानव संस्कृति अपनी अद्भुत शक्ति दिखाकर भी कितनी कम सफलता पा सकी | आज भी हमारी ज़हनियत में कल्चरल फोर्सेज की वह कदर नहीं जो पैसे वालों और अफसरों की हैं |"[12] वस्तुतः भौतिक उन्नति के साथ जब हमारा सांस्कृतिक समन्वय नहीं हो पाता तो सांस्कृतिक धरातल पर गतिरोध की स्थिति उत्पन्न होती है | यथा- "हमारा देश विचारों और रीति-रिवाजों का एक महान अजायबघर है | सैकड़ों सदियों के रहन-सहन, रीति-बरताव और मान्यताओं को, जो आज भौतिक विज्ञान के युग में एकदम अनुपयुक्त सिद्ध होती है, हमारा समाज अंधनिष्ठा के साथ अपनाये हुए है | हर युग में जो सुधार आये, जितने ऐतिहासिक प्रभाव पड़े, उनमें से अधिकतर आज भी हमारे सिर पर बने रखे हैं | हमारे घरों, गलियों में रमे हुए साधु, वैरागी, फ़कीर हैं, चंडी पाठ करने वाले पंडित, ब्याह-मुंडन, जनेऊ से लेकर मृतक संस्कार तक कराने वाले पंडित, कथा बाँचने वाले पंडित, शास्त्रार्थ करने वाले पंडित ; भूत झाड़ने वाले ओझा-सयाने, ... दहेज, ऊँच-नीच, तेंतीस करोड़ देवता- यह बेमतलब दिमाग खराब करने वाली दकियानूसी बातें भरी हुई हैं | इनमें अंधविश्वास जमा होने के कारण हमारे समाज में आत्म-विश्वास ही नहीं रहा | भौतिक विज्ञान की इतनी तेजस्वी प्रगति के युग में ये तमाम पुराना ढाँचा अर्थहीन हो गया है |"[13]

'भूख' उपन्यास में एक ओर मानव का स्वार्थ है तथा दूसरी ओर दबे पिसे छले गये मनुष्य की कारूणिक स्थिति जो पाठक को झकझोरती है | इन परिस्थितियों में सांस्कृतिक मूल्यों तथा मानवीय मूल्यों का ह्रास हो जाता है | उपन्यास के निम्नवर्गीय पात्र नुरुद्दीन तथा अजीम स्त्री देह का व्यापार करने

लगते हैं| परिणामस्वरूप सांस्कृतिक मूल्य तथा मानवीय मूल्य नष्ट हो जाते हैं| नागर जी लिखते हैं- "अस्सी प्रतिशत भले घरों की बहू-बेटियाँ मजबूर किए जाने पर पैसों या खाने के लालच से, अथवा भूख और चिंताओं की उलझन से घुटकर दो घड़ी गम गलत करने की नीयत से वेश्याएँ हो चुकी हैं |"[14]

इसी प्रकार 'अमृत और विष' उपन्यास के सम्बन्ध में डॉ. सुदेश बत्रा का कथन है- "यह उपन्यास समूचे भारतीय सांस्कृतिक जागरण की एक सजीव एवं सक्रिय आंदोलनात्मक परिणति है |"[15] वास्तव में नागर जी दो धर्मो तथा संस्कृतियों के मिलन तथा समन्वय पर अधिक बल देते हैं जिसका चित्रण इस उपन्यास में विभिन्न स्थलों पर हुआ है | यथा- "एक सांस्कृतिक समन्वय भी अपने ढंग से होता रहा | मुसलमानों ने हिन्दुओं के अनेक रीति-रिवाज अपनाये | हिन्दू भी दरगाहों और पीरों को मानने लगे |"[16] आलोच्य उपन्यास में ही लेखक एक अन्य स्थल पर लिखते हैं- "करोड़ों ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र इस देश भर में ऐसे भी थे जिन्होंने राम के साथ-साथ अल्ला को भी जोड़ लिया | तैंतीस करोड़ देवी-देवताओं में कुछ सैंकड़ों औलिया, पीर, शहीद और भी जुड़ गये | और इससे उनकी तनिक भी धार्मिक हानि न हुई |"[17] उपन्यास में हिन्दू-मुसलमानों के आपसी संबंधों की बहुत चर्चा हुई है, 'हिदायत' नामक पात्र के माध्यम से हिन्दू-मुस्लिम एकता तथा अनेकता पर उपन्यासकार नागर जी टिप्पणी करते है | यथा- "अमाँ ये हिन्दू-मुसलमान का झगड़ा तो हमने सिर्फ यहाँ शहर ही में आके देखा, हमारे गाँवों में तो यह तमाशा अभी तक दिखाई ही नहीं देता | जब एक गाँव वाले दूसरे गाँववालों पर हमला करते हैं तो हिन्दू-मुसलमान सब साथ होते हैं | उसमें ये कभी नहीं होता कि मुसलमान सिर्फ हिन्दुओं को ही मारें और मुसलमानों को छोड़ दें |"[18]

नागर जी ने 'अमृत और विष' उपन्यास में न केवल हिन्दू-मुस्लिम के रीति-रिवाज, रहन-सहन, आचार-विचार आदि का चित्रण किया है अपितु वह लिखते है- "जो हिन्दुओं का ब्रह्मराक्षस है, वही मुसलमानों का शैतान है|"[19] इसी प्रकार 'नाच्यौ बहुत गोपाल' उपन्यास के माध्यम से मेहतर जाति की परम्पराओं, रीति-रिवाज, खान-पान, रहन-सहन आदि को बड़े ही सजीव ढंग से चित्रित किया है | इस उपन्यास में भी नागर जी की समन्यवादी दृष्टि प्रबल रही है | उपन्यास के 'नरायन' नामक पात्र कहते है- "हमाये लोगों में हिंदी-मुसलमान कुछ नही होता सरकार | हमारे बाप मुसलमानी हल्के में रहते थे |बाप क्या दादा भी वहीं रहे, सो सब मुसलमानी चाल-चलन अख्तियार कर लिए थे |"[20] यही कारण है कि हिन्दू संस्कृति तथा मुस्लिम संस्कृति की निकटता बढ़ी जिसका समन्वित रूप भारतीय संस्कृति में पाया

जाता है | "हिन्दुओं में पर्दा-प्रथा मुस्लिम संस्कृति की ही देन है जबकि मुस्लिम समाज में जाति प्रथा हिन्दुओं की देन है |"[21] यह प्रभाव हिन्दू-मुस्लिम संस्कृति में ही नहीं अपितु ईसाई समाज में भी देखा जा सकता है जिसका स्पष्टीकरण 'नाच्यौ बहुत गोपाल' उपन्यास में नागर जी इन शब्दों में करते है- "जो कुलीन हिन्दू अथवा कुलीन मुसलमान ईसाई बनते हैं वे अकुलीन ईसाईयों से शादी ब्याह नहीं करते |"[22]

निष्कर्षतः भारतीय संस्कृति पर पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव अमृतलाल नागर के उपन्यासों में स्पष्ट लक्षित होता है, जिसके विभिन्न आयामों तथा स्वरूपों को सूक्ष्मता के साथ लेखक ने अभिव्यक्त किया है | यद्यपि ग्रामीण जीवन की सांस्कृतिक मान्यताओं तथा परम्पराओं पर इसका अधिक प्रभाव नहीं पड़ा किन्तु नगरों में यह प्रभाव हावी रहा है | वास्तव में अमृतलाल नागर जिस युग में उपन्यास सृजन में प्रवृत्त थे वह युग धार्मिक तथा संस्कृतिक दृष्टि से पुनर्जागरण का युग था क्योंकि एक ओर जहाँ भारतीय जनता स्व-अस्तित्व के लिए संघर्षशील थीं तथा दूसरी ओर धर्म तथा संस्कृति के क्षेत्र में भी नवीन चेतना का प्रादुर्भाव हो रहा था | वस्तुतः नागर जी दो धर्मो तथा संस्कृतियों के मिलन एवं समन्वय पर अधिक बल देते है | उनके उपन्यासों में हिन्दू-मुस्लिम संस्कृति के मिश्रित रूप का चित्रण हुआ है | नागरजी जहाँ एक ओर उपभोक्तावादी संस्कृति के वर्चस्व का चित्रण करते हैं वहीं दूसरी ओर निर्धन असहाय लोगों के जीवन यापन के लिए मूलभूत आवश्यकताओं की कमी की समस्या का भी वर्णन करते है | निम्नवर्ग की आर्थिक विषमता, उनकी जीवन-शैली, रहन-सहन, खान-पान आदि को नियंत्रित करती है, किन्तु जब यही वर्ग उच्चवर्ग की ओर अग्रसर होता है तो उसकी मानसिकता के साथ-साथ सांस्कृतिक चेतना में भी परिवर्तन आता है |

सन्दर्भ ग्रन्थ-

1. चव्हान, (डॉ.) अजीत. *कहानीकार महीप सिंह संवेदना और शिल्प*, पृ. 213
2. रायज़ादा, (डॉ.) कविता. *पं. श्रीराम शर्मा आचार्य की सांस्कृतिक-सामाजिक चेतना*, पृ. 56
3. वही, पृ. 57
4. अंजु. *बोधा के काव्य में लोक-संस्कृति*, पृ. 09
5. मिश्र, ब्रजकुमार. *उपन्यासकार अमृतलाल नागर*, पृ. 96
6. वही, पृ. 97
7. ग्रोवर बी. एम. एवं यश्पाल. *आधुनिक भारत का इतिहास*, पृ. 697
8. शर्मा, (डॉ.) केशव देव.*आधुनिक हिंदी उपन्यास और वर्ग-संघर्ष*, पृ.59
9. नागर, अमृतलाल. *बूँद और समुद्र*, पृ. 115
10. वही, पृ. 281
11. वही, पृ. 132
12. वही, पृ. 18
13. नागर, अमृतलाल. *बूँद और समुद्र*, पृ. 374
14. नागर, अमृतलाल. *भूख*, पृ. 88
15. बत्रा, (डॉ.) सुदेश. *अमृतलाल नागर व्यक्तित्व कृतित्व एवं सिद्धांत*, पृ.97
16. नागर, अमृतलाल. *अमृत और विष*, पृ. 468
17. वही, पृ. 467
18. वही, पृ. 465
19. वही, पृ. 151
20. नागर, अमृतलाल. *नाच्यौ बहुत गोपाल*, पृ. 26
21. मिश्र, ब्रज कुमार. *उपन्यासकार अमृतलाल नागर*, पृ. 98
22. नागर, अमृतलाल. *नाच्यौ बहुत गोपाल*, पृ. 35